सबसे ऊंची प्रेम सगाई

सबसे ऊंची प्रेम सगाई

दुर्योधन के मेवा त्याग्यो, साग विदुर घर खाई |

जूठे फल शबरी के खाये, बहु विधि स्वाद बताई |

राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हा, तामे जूठ उठाई |

प्रेम के बस पारथ रथ हांक्यो, भूल गये ठकुराई |

ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई |

प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं, आप बने हरि नाई |

सूर क्रूर एहि लायक नाहीं, केहि लगो करहुं बड़ाई |

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/14/title/sabse-unchi-prem-sagai

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |